NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

फसल अवशेष प्रबन्धन

जितेन्द्र यादव[1], विपिन कुमार यादव[2]

परिचय –

फसल अवशेष को उपयोग करने के तरीके :

- ❖ फसल अवशोषों का प्रबन्ध कर जमीन में जीवांश पदार्थ की मात्रा में वृद्धि कर जमीन की उर्वरता बनाये रखें।
- ❖ वर्तमान में हमारे देश में इस कार्य के लिए हैपी सीडर, रोटावेटर से खेत को तैयार करते सयम
- ❖ एक बार में ही फसल अवशेषों को बारीक टुकड़ो में काट कर मिट्टी में मिलाना काफी आसान हो गया है।
- ❖ धान के बाद अवशेष ठूठ वाले खेत में नमी होने की स्थिति में सीधे जीरो टिल सीड ड्रिल मशीन से बुवाई कर सकते हैं। धान के ठूठ कुछ दिन बाद भूमि में सड़कर खाद बन जाते हैं।
- ❖ फसल अवशोषों से कम्पोस्ट तैयार कर खेत में प्रयोग करें। उन क्षेत्रों में जहॉ चारे की कमी नही होती वहॉ मक्का की कड़वी व धान की पुआल को खेत में ढेर बनाकर खुला छोड़ने के बजाय गड्ढो में कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करना आवश्यक है।
- ❖ जब किसान भाई खरीफ, रबी, जायद की फसलों की कटाई, मड़ाई करते हैं तो जड़, तना, पत्तियों के रुपों में पादप अवशेष भूमि के अन्दर एवं भूमि के ऊपर उपलब्ध होते है। इनको लगभग 20 किग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई/पलेवा के समय मिला देने से पादप अवशेष लगभग बीस से तीस दिन के भीतर जमीन में सड़ जाते हैं, जिससे मृदा कार्बनिक पदार्थो एवं अन्य तत्वों की बढ़ोत्तरी होती है जिसके फलस्वरुप फसलों के उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

फसल अवशेष न जलायें, बल्कि इनसे लाभ उठायें :

- ❖ फसलों की कम्बाइन आदि यंत्रों से कटाई के उपरान्त बचे फसल अवशेष अत्यन्त उपयोगी है।
- ❖ इनमें महत्वपूर्ण कार्बनिक पदार्थ तथा पोषक तत्व होते है।
- ❖ इनसे पोषक कार्बनिक खाद तैयार की जा सकती है।
- ❖ फसल अवशेषों से बायोकोल, बायो सी0एन0जी0 तथा बायो एथेनाल का व्यावसायिक उत्पादन किया जा सकता है।

फसल अवशेष जलाने से हानियाँ :

- ❖ फसलों के अवशेषों को जलाने से उनके जड़, तना, पत्तियों के

[1]जितेन्द्र यादव, [2]विपिन कुमार यादव
[1](शोध छात्र) शस्य विज्ञान विभाग एवं कल्यान सिंह यादव
[2](शोध छात्र) अनुवांशिक एवं पादप प्रजनन विभाग
श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय चण्डेश्वर आजमगढ़। उत्तर प्रदेश।

लाभदायक पोषक तत्व नष्ट हो जाते है।

नवोन्मेषी कृषि

- ❖ फसल अवशेषों को जलाने से मृदा ताप में वृद्धि होती है जिसके कारण मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक दशा पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- ❖ पदप अवशेषों में लाभदायक मित्र कीट जलकर मर जाते है। जिसके कारण वातावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- ❖ पशुओ के चारे की व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- ❖ नजदीक फसल अवशेषों को जलाने से किसनों की फसलो में और आबादी में आग लगने की संभावना बनी रहती है।
- ❖ वायु प्रदुषण से अनेकों बीमारियां तथा धुंध के कारण दुर्घटना हो सकती है।

फसल अवशेष प्रबन्धन से लाभ :

- ❖ फसल अवशेषों से कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाकर प्रयोग करने से खेत की उर्वरता में वृद्धि होती है।
- ❖ भूमि में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है।
- ❖ खेत की मृदा की भौतिक एवं रासायनिक संरचना सुधरती है।
- ❖ भूमि में जल धारण एवं वायुसंचार क्षमता बढ़ती है।
- ❖ फसल अवशेषों की मल्चिंग करने से खरपतवार कम होते है तथा जल का वाष्पीकरण कम होता है।

?

वेस्ट डिकम्पोजर साल्यूशन

- ❖ फसल की कटाई के बाद खेत में बचे ठण्डल व अन्य अवशेषों पर छिड़काव करने से फसल अवशेष की स्वस्थानिक कम्पोस्टिंग हो जाती है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE